ISSN Print: 2664-7699
ISSN Online: 2664-7702
Impact Factor: RJIF 8.53
IJHA 2025; 7(2): 580-587
www.humanitiesjournals.net
Received: 02-12-2025
Accepted: 25-12-2025

डॉ० महेश कुमार पिन्टू
सूर्या अपार्टमेन्ट, फ्लैट नं0– 102
आदमपुर, भागलपुर, बिहार, भारत

Corresponding Author:
डॉ. कैवल्य चैतन्य
सूर्या अपार्टमेन्ट, फ्लैट नं0– 102
आदमपुर, भागलपुर, बिहार, भारत

बिहार के विकास में नीतीश कुमार की भूमिका: 2005 से 2025 तक

डॉ० महेश कुमार पिन्टू

DOI: https://www.doi.org/10.33545/26647699.2025.v7.i2g.262

सारांश

यह शोध पत्र "बिहार के विकास में नीतीश कुमार की भूमिका: 2005 से 2025 तक" राज्य के सामाजिक, आर्थिक, प्रशासनिक तथा अवसंरचनात्मक विकास में नीतीश कुमार के योगदान का समग्र विश्लेषण प्रस्तुत करता है। वर्ष 2005 में सत्ता संभालने के बाद बिहार एक लंबे समय से व्याप्त प्रशासनिक अव्यवस्था, कानून-व्यवस्था की समस्या तथा विकासात्मक पिछड़ेपन से जूझ रहा था। इस अध्ययन में बीते दो दशकों के दौरान लागू नीतियों, योजनाओं एवं सुधारात्मक कदमों का क्रमबद्ध मूल्यांकन किया गया है।

शोध में यह स्पष्ट किया गया है कि नीतीश कुमार के नेतृत्व में सुशासन की अवधारणा को केंद्र में रखकर प्रशासनिक सुधार किए गए। कानून-व्यवस्था में सुधार, त्वरित न्याय प्रक्रिया, भ्रष्टाचार पर नियंत्रण तथा पुलिस-प्रशासन की सक्रियता से राज्य में निवेश एवं सामाजिक विश्वास का वातावरण बना। साथ ही सड़क, पुल, बिजली, सिंचाई तथा ग्रामीण संपर्कता के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति हुई, जिससे आर्थिक गतिविधियों को गति मिली।

शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण परिवर्तन देखे गए। विद्यालयों में नामांकन बढ़ा, छात्रवृत्ति योजनाओं का विस्तार हुआ तथा साइकिल और पोशाक योजना जैसी पहल ने विशेष रूप से बालिकाओं की शिक्षा को प्रोत्साहित किया। स्वास्थ्य सेवाओं में प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों का सुदृढ़ीकरण, मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य कार्यक्रमों तथा सामाजिक सुरक्षा योजनाओं ने जनकल्याण को मजबूती दी।

महिला सशक्तिकरण, पंचायती राज संस्थाओं में आरक्षण, शराबबंदी नीति तथा हरित विकास की दिशा में उठाए गए कदमों का भी इस शोध में विश्लेषण किया गया है। हालांकि कुछ नीतियों पर आलोचनात्मक दृष्टि भी रखी गई है, जैसे बेरोज़गारी, औद्योगिक विकास की सीमाएँ तथा प्रवासन की समस्या।

समग्र रूप से यह शोध निष्कर्ष प्रस्तुत करता है कि 2005 से 2025 के बीच नीतीश कुमार ने बिहार को विकास की नई दिशा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, हालांकि सतत एवं समावेशी विकास के लिए अभी भी कई चुनौतियाँ शेष हैं।

मुख्य शब्द: बिहार विकास, नीतीश कुमार, सुशासन, आधारभूत संरचना, शिक्षा, स्वास्थ्य, महिला सशक्तिकरण।

प्रस्तावना

बिहार भारत के उन राज्यों में रहा है जहाँ ऐतिहासिक, सामाजिक और आर्थिक कारणों से विकास की गति लंबे समय तक अपेक्षाकृत धीमी रही। स्वतंत्रता के बाद कई दशकों तक राजनीतिक अस्थिरता, कमजोर आधारभूत संरचना, प्रशासनिक अक्षमता तथा सामाजिक विभाजन ने राज्य के समग्र विकास को बाधित किया। वर्ष 2005 बिहार के राजनीतिक और विकासात्मक इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ के रूप में उभरा, जब नीतीश कुमार के नेतृत्व में नई सरकार का गठन हुआ। इस परिवर्तन को आमतौर पर "सुशासन की शुरुआत" के रूप में देखा जाता है, जिसने राज्य के विकास की दिशा और दृष्टि दोनों को नया स्वरूप दिया।

नीतीश कुमार के नेतृत्व (2005-2025) की अवधि में बिहार में शासन व्यवस्था, कानून-व्यवस्था, आधारभूत संरचना, शिक्षा, स्वास्थ्य, महिला सशक्तिकरण तथा सामाजिक न्याय के क्षेत्रों में कई उल्लेखनीय पहल की गईं। सड़कों, पुलों, ग्रामीण संपर्क मार्गों और विद्युत आपूर्ति के विस्तार ने राज्य की भौतिक संरचना को मजबूती प्रदान की। साथ ही, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार, बालिका शिक्षा को बढ़ावा, साइकिल योजना, पोशाक योजना तथा आरक्षण और सामाजिक कल्याण से जुड़ी नीतियों ने समाज के हाशिए पर खड़े वर्गों को मुख्यधारा से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

यह शोध पत्र वर्ष 2005 से 2025 तक बिहार के विकास में नीतीश कुमार की भूमिका का विश्लेषण करता है। इसमें आर्थिक, सामाजिक और प्रशासनिक संकेतकों के आधार पर विकास की प्रवृत्तियों का अध्ययन किया गया है। साथ ही, इस कालखंड में सामने आई चुनौतियों, आलोचनाओं और सीमाओं को भी संतुलित दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया गया है। इस अध्ययन का उद्देश्य यह समझना है कि किस प्रकार नेतृत्व, नीतिगत निर्णय और प्रशासनिक सुधार किसी पिछड़े माने जाने वाले राज्य को विकास के नए पथ पर अग्रसर कर सकते हैं।

अध्ययन के उद्देश्य

1. 2005-2025 के बीच बिहार के सामाजिक आर्थिक विकास का विश्लेषण करना।
2. नीतीश कुमार सरकार की प्रमुख नीतियों एवं योजनाओं का मूल्यांकन करना।
3. विभिन्न क्षेत्रों (सड़क, शिक्षा, स्वास्थ्य, महिला सशक्तिकरण) में प्रगति को तालिका एवं आलेख के माध्यम से प्रस्तुत करना।
4. विकास की सीमाओं और चुनौतियों की पहचान करना।

शोध पद्धति

यह अध्ययन पूर्णतः द्वितीयक आँकड़ों पर आधारित है। इसमें सरकारी आर्थिक सर्वेक्षण, बिहार बजट, दस्तावेज, जनगणना आँकड़े, नीति आयोग एवं अन्य संस्थागत रिपोर्टें का विश्लेषण किया गया है। आँकड़ों को समझने के लिए तालिकाओं और आलेखों का प्रयोग किया गया है।

2005 से पूर्व बिहार की स्थिति (संक्षिप्त पृष्ठभूमि)

2005 से पूर्व बिहार की सामाजिक, आर्थिक और प्रशासनिक स्थिति अत्यंत जटिल तथा चुनौतियों से भरी हुई थी। स्वतंत्रता के बाद लंबे समय तक बिहार देश के प्रमुख राज्यों में गिना जाता था, किंतु समय के साथ विकास की गति धीमी होती गई और राज्य अनेक संरचनात्मक समस्याओं से घिरता चला गया। औद्योगिक पिछड़ापन, कमजोर आधारभूत संरचना, कानून-व्यवस्था की बिगड़ती स्थिति तथा प्रशासनिक अक्षमता ने राज्य के समग्र विकास को बाधित किया।

आर्थिक दृष्टि से बिहार लंबे समय तक देश के सबसे पिछड़े राज्यों में शामिल रहा। 1990 के दशक तक प्रति व्यक्ति आय राष्ट्रीय औसत से काफी कम थी। कृषि पर अत्यधिक निर्भरता के बावजूद सिंचाई सुविधाओं, आधुनिक तकनीक और बाजार व्यवस्था का अभाव था। औद्योगिक विकास लगभग नगण्य था, विशेषकर 2000 में झारखंड के अलग होने के बाद बिहार को खनिज संसाधनों और बड़े औद्योगिक ढाँचों का बड़ा नुकसान हुआ। इससे राज्य की आर्थिक क्षमता और राजस्व आधार और भी कमजोर हो गया।

सामाजिक क्षेत्र में भी स्थिति संतोषजनक नहीं थी। शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं की हालत अत्यंत दयनीय थी। प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षकों की भारी कमी, स्कूलों में आधारभूत सुविधाओं का अभाव और उच्च ड्रॉप-आउट दर सामान्य समस्या थी। स्वास्थ्य क्षेत्र में सरकारी अस्पतालों और प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों की स्थिति खराब थी, जिससे मातृ मृत्यु दर, शिशु मृत्यु दर और कुपोषण जैसी समस्याएँ गंभीर बनी रहीं। सामाजिक असमानता, जातिगत विभाजन और गरीबी ने विकास को और अधिक जटिल बना दिया।

2005 से पूर्व बिहार की पहचान मुख्यतः कानून-व्यवस्था की खराब स्थिति से जुड़ी हुई थी। अपहरण, फिरौती, संगठित अपराध और माफिया-राज जैसी समस्याएँ आम थीं। प्रशासनिक तंत्र राजनीतिक हस्तक्षेप और भ्रष्टाचार से प्रभावित था। आम नागरिकों में सुरक्षा और न्याय व्यवस्था के प्रति विश्वास कमजोर हो चुका था। निवेशकों और औद्योगिक संस्थानों के लिए बिहार एक असुरक्षित राज्य माना जाने लगा था।

राजनीतिक दृष्टि से भी यह काल अस्थिरता और अव्यवस्था का रहा। 1990 के बाद सामाजिक न्याय की राजनीति ने सत्ता संरचना में बदलाव तो किया, लेकिन सुशासन और विकास के क्षेत्र में अपेक्षित परिणाम नहीं दे सकी। योजनाओं के क्रियान्वयन में पारदर्शिता की कमी और कमजोर प्रशासनिक नियंत्रण के कारण विकास कार्यक्रम धरातल पर प्रभावी रूप से नहीं उतर पाए।1

संक्षेप में कहा जाए तो 2005 से पूर्व बिहार एक ऐसे राज्य के रूप में देखा जाता था जहाँ विकास की संभावनाएँ होते हुए भी प्रशासनिक अक्षमता, कमजोर कानून-व्यवस्था, सामाजिक-आर्थिक पिछड़ापन और राजनीतिक अव्यवस्था के कारण राज्य गंभीर संकट में था। यही वह पृष्ठभूमि थी जिसमें 2005 के बाद बिहार में नेतृत्व परिवर्तन हुआ और विकास व सुशासन को केंद्र में रखकर नई नीतियों की शुरुआत हुई, जिसने राज्य के विकास पथ को नई दिशा प्रदान की।

सुशासन और प्रशासनिक सुधार

2005 में सत्ता संभालने के बाद नीतीश कुमार ने बिहार की राजनीति और प्रशासन को “सुशासन” के एजेंडे के साथ नई दिशा दी। उस समय बिहार कानून-व्यवस्था की कमजोरी, प्रशासनिक शिथिलता और विकास की धीमी गति जैसी गंभीर चुनौतियों से जूझ रहा था। नीतीश कुमार की सरकार ने सबसे पहले शासन की बुनियादी संरचना को दुरुस्त करने पर ध्यान केंद्रित किया।

सुशासन का प्रमुख आधार कानून-व्यवस्था में सुधार रहा। पुलिस सुधार, त्वरित कार्रवाई, अपराधियों पर सख्ती और राजनीतिक

हस्तक्षेप को सीमित करने से राज्य में सुरक्षा की स्थिति बेहतर हुई। विशेष अदालतों, फास्ट ट्रैक कोर्ट और पुलिस-प्रशासन के बेहतर समन्वय से न्याय प्रक्रिया में गति आई। इससे निवेश और सामाजिक जीवन के लिए अनुकूल वातावरण बना।

प्रशासनिक सुधारों के तहत पारदर्शिता और जवाबदेही पर जोर दिया गया। लोक सेवाओं की समयबद्ध आपूर्ति के लिए लोक सेवा का अधिकार अधिनियम लागू किया गया, जिससे नागरिकों को प्रमाण-पत्र, राशन कार्ड, पेंशन जैसी सेवाएँ तय समय में मिलने लगीं। ई-गवर्नेंस, ऑनलाइन आवेदन, और ट्रैकिंग सिस्टम ने भ्रष्टाचार और बिचौलियों की भूमिका को कम किया।

नीतीश कुमार ने विकेंद्रीकरण को बढ़ावा देते हुए पंचायती राज संस्थाओं को सशक्त किया। महिलाओं को 50% आरक्षण देकर स्थानीय शासन में उनकी भागीदारी सुनिश्चित की गई। इससे सामाजिक न्याय और जमीनी स्तर पर निर्णय-निर्माण मजबूत हुआ। साथ ही, नौकरशाही में अनुशासन और प्रदर्शन-आधारित मूल्यांकन की संस्कृति को प्रोत्साहित किया गया।2

आर्थिक एवं सामाजिक प्रशासन में भी सुधार दिखे। बुनियादी ढाँचे सड़क, पुल, बिजली में सुधार ने प्रशासनिक क्षमता को बढ़ाया। शिक्षा और स्वास्थ्य में योजनाओं का बेहतर क्रियान्वयन, जैसे स्कूल उपस्थिति बढ़ाने के लिए साइकिल/पोशाक योजना और स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार, सुशासन के सामाजिक आयाम को दर्शाता है।

तालिका 1: कानून व्यवस्था संकेतक (2005 बनाम 2020)

संकेतक	2005	2020
दर्ज गंभीर अपराध	उच्च	अपेक्षाकृत कम
महिला सुरक्षा शिकायतें	अधिक	घटती प्रवृत्ति
पुलिस बल आधुनिकीकरण	न्यून	बढ़ा हुआ

स्रोत: National Crime Records Bureau (NCRB) - "Crime in India" रिपोर्ट

2005 से 2025 तक, राजनीतिक उतार-चढ़ाव के बावजूद, नीतीश कुमार की पहचान प्रशासनिक स्थिरता, नियम-आधारित शासन और सेवा-उन्मुख प्रशासन के रूप में बनी रही। कुल मिलाकर, सुशासन और प्रशासनिक सुधारों ने बिहार को अराजकता से निकालकर अपेक्षाकृत व्यवस्थित और विकासोन्मुख राज्य बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

आधारभूत संरचना का विकास

2005 में नीतीश कुमार के नेतृत्व में बिहार में सत्ता परिवर्तन के साथ ही राज्य की विकास रणनीति का केंद्र आधारभूत संरचना बना। इससे पहले बिहार सड़कों, पुलों, बिजली, सिंचाई और शहरी सुविधाओं के क्षेत्र में काफी पिछड़ा हुआ माना जाता था। नीतीश कुमार सरकार ने "सुशासन" और "विकास" को प्राथमिकता देते हुए इन क्षेत्रों में व्यापक सुधार किए।

सड़क और पुल निर्माण नीतीश कुमार की विकास नीति का सबसे प्रमुख आधार रहा। मुख्यमंत्री ग्रामीण सड़क योजना तथा प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के प्रभावी क्रियान्वयन से हजारों गांवों को पक्की सड़कों से जोड़ा गया। राज्य राजमार्गों और राष्ट्रीय राजमार्गों के चौड़ीकरण से यातायात सुगम हुआ। गंगा नदी पर बने महात्मा गांधी सेतु के पुनर्निर्माण और जेपी सेतु, कच्ची दरगाह बिदुपुर पुल जैसे मेगा प्रोजेक्ट्स ने उत्तर और दक्षिण बिहार के बीच संपर्क को मजबूत किया।

बिजली क्षेत्र में सुधार भी आधारभूत विकास का अहम हिस्सा रहा। 2005 से पहले बिहार में बिजली की भारी कमी थी, लेकिन हर घर बिजली योजना, सात निश्चय कार्यक्रम और केंद्र की सौभाग्य योजना के माध्यम से गांव-गांव तक बिजली पहुंचाई गई। विद्युत उत्पादन क्षमता बढ़ी और ट्रांसमिशन नेटवर्क का विस्तार हुआ, जिससे औद्योगिक और घरेलू दोनों क्षेत्रों को लाभ मिला।

शहरी आधारभूत संरचना के अंतर्गत नगर निकायों का विस्तार, जलापूर्ति, सीवरेज, स्ट्रीट लाइट और ठोस कचरा प्रबंधन पर ध्यान दिया गया। पटना, गया, भागलपुर और मुजफ्फरपुर जैसे शहरों में सड़क, फ्लाईओवर और ड्रेनेज सिस्टम विकसित किए गए। स्मार्ट सिटी मिशन के तहत आधुनिक शहरी सुविधाओं की दिशा में कदम बढ़ाए गए।3

सिंचाई और जल संसाधन विकास में नहरों की मरम्मत, बाढ़ नियंत्रण तटबंधों का निर्माण और जल प्रबंधन योजनाएं शुरू की गईं। इससे कृषि उत्पादन में स्थिरता आई और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती मिली।

तालिका 2: सड़क लंबाई में वृद्धि (किमी)

वर्ष	कुल सड़क लंबाई
2005	कम
2015	मध्यम
2025	उल्लेखनीय

स्रोत: भारत सरकार / PIB रिपोर्ट - Transforming India's Transport Infrastructure (2005–2025)

कुल मिलाकर, 2005 से 2025 के बीच नीतीश कुमार के नेतृत्व में बिहार की आधारभूत संरचना में उल्लेखनीय सुधार हुआ। बेहतर सड़क नेटवर्क, विश्वसनीय बिजली आपूर्ति, शहरी सुविधाओं का विस्तार और सिंचाई व्यवस्था ने राज्य के सामाजिक-आर्थिक विकास को नई दिशा दी और बिहार को विकास की मुख्यधारा से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

शिक्षा क्षेत्र में सुधार

2005 में नीतीश कुमार के नेतृत्व में सरकार बनने के बाद बिहार में शिक्षा क्षेत्र को विकास की धुरी माना गया। उस समय राज्य की शिक्षा व्यवस्था अव्यवस्था, कम नामांकन, शिक्षकों की भारी कमी और आधारभूत संरचना के अभाव से जूझ रही थी। नीतीश कुमार सरकार ने शिक्षा को सामाजिक न्याय और मानव संसाधन विकास से जोड़ते हुए व्यापक सुधारों की शुरुआत की।

सबसे पहला और महत्वपूर्ण कदम विद्यालयों की आधारभूत संरचना में सुधार था। हजारों नए प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालय खोले गए, जर्जर भवनों का पुनर्निर्माण हुआ तथा स्कूलों में कक्षाओं, शौचालयों (विशेषकर बालिकाओं के लिए), पेयजल और बिजली जैसी मूलभूत सुविधाएँ उपलब्ध कराई गईं। इससे ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों में स्कूल जाने का माहौल बना।4

नामांकन और उपस्थिति बढ़ाने के लिए कई प्रोत्साहन योजनाएँ लागू की गईं। मुख्यमंत्री पोशाक योजना, साइकिल योजना और छात्रवृत्ति योजनाओं ने विशेष रूप से बालिकाओं और वंचित वर्गों की शिक्षा को बढ़ावा दिया। इन योजनाओं के कारण बालिका नामांकन में ऐतिहासिक वृद्धि हुई और लिंग अनुपात में सुधार देखा गया। साइकिल योजना ने ग्रामीण क्षेत्रों में माध्यमिक शिक्षा तक पहुँच आसान बना दी।

शिक्षक नियुक्ति और प्रशिक्षण भी एक अहम सुधार रहा। बड़े पैमाने पर पंचायत और नगर निकाय स्तर पर शिक्षकों की बहाली की गई, जिससे शिक्षक-छात्र अनुपात में सुधार हुआ। साथ ही शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों को सशक्त किया गया ताकि शिक्षण गुणवत्ता बेहतर हो सके। यद्यपि गुणवत्ता को लेकर चुनौतियाँ बनी रहीं, फिर भी शिक्षकों की उपलब्धता ने स्कूल व्यवस्था को स्थिरता दी।5

उच्च शिक्षा के क्षेत्र में भी विस्तार हुआ। नए विश्वविद्यालयों, इंजीनियरिंग कॉलेजों, मेडिकल कॉलेजों और पॉलिटेक्निक संस्थानों की स्थापना की गई। कौशल विकास और तकनीकी शिक्षा पर विशेष जोर दिया गया ताकि युवाओं को रोजगारोन्मुख शिक्षा मिल सके। स्टूडेंट क्रेडिट कार्ड योजना ने आर्थिक रूप से कमजोर छात्रों को उच्च शिक्षा के अवसर प्रदान किए।

तालिका 3: साक्षरता दर (%)

वर्ष	कुल	पुरुष	महिला
2001	47	60	33
2011	63	73	53
2021	70+	78	62

स्रोत: Office of the Registrar General & Census Commissioner, India - Census of India 2001 & 2011

2005 से 2025 के बीच नीतीश कुमार के नेतृत्व में बिहार की शिक्षा व्यवस्था में मात्रात्मक और संरचनात्मक सुधार स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। यद्यपि गुणवत्ता, सीखने के परिणाम और उच्च शिक्षा में अनुसंधान जैसी चुनौतियाँ अभी भी मौजूद हैं, फिर भी शिक्षा के क्षेत्र में किए गए ये सुधार बिहार के सामाजिक-आर्थिक विकास की मजबूत नींव साबित हुए हैं।

स्वास्थ्य क्षेत्र में प्रगति

2005 में नीतीश कुमार के नेतृत्व में सरकार बनने के बाद बिहार के स्वास्थ्य क्षेत्र में संरचनात्मक सुधारों की एक नई शुरुआत हुई। इससे पहले राज्य की स्वास्थ्य व्यवस्था जर्जर थी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों की कमी, डॉक्टरों व नर्सों का अभाव, तथा मातृ एवं शिशु मृत्यु दर का ऊँचा स्तर प्रमुख समस्याएँ थीं। 2005 से 2025 के बीच स्वास्थ्य क्षेत्र को सरकार की प्राथमिकताओं में शामिल किया गया, जिससे आधारभूत ढाँचे, सेवाओं और जनस्वास्थ्य संकेतकों में उल्लेखनीय सुधार देखने को मिला।6

सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि प्राथमिक स्वास्थ्य संरचना का विस्तार और सुदृढ़ीकरण रही। राज्य में प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र (PHC), अतिरिक्त प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र (APHC) और सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र (CHC) की संख्या बढ़ाई गई। ग्रामीण और दूरदराज़ क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं की पहुँच सुनिश्चित करने के लिए भवन निर्माण, उपकरणों की उपलब्धता और 24×7 सेवाओं पर बल दिया गया। राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन (NHM) के प्रभावी क्रियान्वयन से संस्थागत प्रसव, टीकाकरण और मातृ-शिशु स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार हुआ।7

मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य के क्षेत्र में जननी सुरक्षा योजना, जननी बाल सुरक्षा योजना और ममता कार्यक्रम जैसे प्रयासों ने संस्थागत प्रसव को प्रोत्साहित किया। आशा कार्यकर्ताओं की नियुक्ति और प्रशिक्षण से गर्भवती महिलाओं की पहचान, प्रसव-पूर्व जांच और प्रसवोत्तर देखभाल में सुधार हुआ। परिणामस्वरूप मातृ मृत्यु दर (MMR) और शिशु मृत्यु दर (IMR) में गिरावट दर्ज की गई, जो सार्वजनिक स्वास्थ्य की दृष्टि से एक सकारात्मक संकेत है।8

सरकार ने अस्पतालों और मेडिकल शिक्षा पर भी ध्यान दिया। जिला अस्पतालों का उन्नयन, सदर अस्पतालों में विशेषज्ञ सेवाओं की शुरुआत और नए मेडिकल कॉलेजों की स्थापना/विस्तार से मानव संसाधन और उपचार क्षमता में वृद्धि हुई। दवा उपलब्धता सुनिश्चित करने हेतु मुख्यमंत्री निःशुल्क दवा योजना जैसी पहलों से गरीब और वंचित वर्गों को राहत मिली।

2019 के बाद आयुष्मान भारत–प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना (PM-JAY) के क्रियान्वयन से गरीब परिवारों को कैशलेस उपचार का लाभ मिला। साथ ही, राज्य-स्तरीय योजनाओं और निजी क्षेत्र की भागीदारी (PPP) से उन्नत उपचार सुविधाएँ विकसित हुईं। ई-हॉस्पिटल, टेलीमेडिसिन और डिजिटल पंजीकरण जैसी पहलें सेवाओं की पारदर्शिता और दक्षता बढ़ाने में सहायक रहीं।9

कोविड-19 महामारी के दौरान बिहार सरकार ने परीक्षण, टीकाकरण और उपचार अवसंरचना के विस्तार पर ध्यान दिया। अस्थायी अस्पताल, ऑक्सीजन आपूर्ति और टीकाकरण अभियान ने संकट प्रबंधन की क्षमता को दर्शाया।

तालिका 4: स्वास्थ्य संकेतक

संकेतक	2005	2025
संस्थागत प्रसव (%)	कम	अधिक
शिशु मृत्यु दर	उच्च	घटती

स्रोत: Bihar Government Health Data / SRS आधारित समाचार रिपोर्ट्स

समग्रतः 2005 से 2025 तक नीतीश कुमार के नेतृत्व में बिहार के स्वास्थ्य क्षेत्र में आधारभूत ढाँचे, सेवाओं की पहुँच और जनस्वास्थ्य संकेतकों में उल्लेखनीय प्रगति हुई। यद्यपि डॉक्टरों की कमी, क्षेत्रीय असमानताएँ और गुणवत्ता सुधार जैसी चुनौतियाँ बनी हुई हैं, फिर भी पिछले दो दशकों में किए गए सुधारों ने बिहार की स्वास्थ्य व्यवस्था को अधिक सुदृढ़ और समावेशी बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

महिला सशक्तिकरण और सामाजिक न्याय

2005 के बाद बिहार की राजनीति और विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन देखने को मिला। नीतीश कुमार के नेतृत्व में राज्य सरकार ने "सुशासन" को विकास का आधार बनाया, जिसमें महिला सशक्तिकरण और सामाजिक न्याय को विशेष प्राथमिकता दी गई। यह दौर बिहार के सामाजिक ढांचे को मजबूत करने और वंचित वर्गों को मुख्यधारा से जोड़ने का प्रयास रहा।

महिला सशक्तिकरण की दिशा में पहल

नीतीश कुमार सरकार की सबसे उल्लेखनीय उपलब्धियों में महिला सशक्तिकरण शामिल है। पंचायत राज संस्थाओं और शहरी स्थानीय निकायों में महिलाओं के लिए 50% आरक्षण का प्रावधान कर बिहार देश के अग्रणी राज्यों में शामिल हुआ। इससे ग्रामीण और शहरी स्तर पर महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी बढ़ी और निर्णय-निर्माण प्रक्रिया में उनकी सक्रिय भूमिका सुनिश्चित हुई। आज बिहार की पंचायतों में लाखों महिलाएँ नेतृत्व कर रही हैं, जो सामाजिक बदलाव का सशक्त उदाहरण है।10

तालिका 5: पंचायत प्रतिनिधित्व

वर्ष	महिला प्रतिनिधि (%)
2005	33
2016	50
2025	50+

स्रोत: बिहार सरकार Panchayati Raj Act और महिला आरक्षण जानकारी - राज्य सरकार का आधिकारिक विवरण।

शिक्षा में महिलाओं की भागीदारी

महिलाओं की शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए सरकार ने कई योजनाएँ शुरू कीं। मुख्यमंत्री बालिका साइकिल योजना और पोशाक योजना ने स्कूल जाने वाली लड़कियों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि की। इन योजनाओं से न केवल ड्रॉप-आउट दर घटी, बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों में लड़कियों की शिक्षा के प्रति सामाजिक सोच भी बदली। उच्च शिक्षा में छात्राओं की भागीदारी बढ़ने से महिला सशक्तिकरण को दीर्घकालिक मजबूती मिली।

स्वास्थ्य और सुरक्षा

महिलाओं के स्वास्थ्य और सुरक्षा को सामाजिक न्याय का अहम हिस्सा मानते हुए संस्थागत प्रसव को बढ़ावा दिया गया। आशा कार्यकर्ताओं और प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों के विस्तार से मातृ एवं शिशु मृत्यु दर में कमी आई। साथ ही, शराबबंदी जैसे सामाजिक सुधारात्मक कदमों ने घरेलू हिंसा और पारिवारिक अस्थिरता को कम करने में भूमिका निभाई, जिससे महिलाओं का सामाजिक-आर्थिक वातावरण अपेक्षाकृत सुरक्षित हुआ।11

आर्थिक सशक्तिकरण और स्वयं सहायता समूह

नीतीश कुमार सरकार ने जीविका जैसी योजनाओं के माध्यम से स्वयं सहायता समूहों (SHGs) को बढ़ावा दिया। इन समूहों से जुड़कर लाखों महिलाओं ने छोटे-छोटे व्यवसाय शुरू किए, जिससे उनकी आय और आत्मनिर्भरता में वृद्धि हुई। आर्थिक स्वतंत्रता ने महिलाओं को सामाजिक निर्णयों में अधिक सशक्त बनाया और गरीबी उन्मूलन में भी योगदान दिया।12

सामाजिक न्याय की अवधारणा

नीतीश कुमार के शासनकाल में सामाजिक न्याय का अर्थ केवल आरक्षण तक सीमित नहीं रहा, बल्कि समान अवसर और सम्मानजनक जीवन की दिशा में ठोस कदम उठाए गए। अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, पिछड़े और अति पिछड़े वर्गों के लिए छात्रवृत्ति, छात्रावास, कौशल विकास और रोजगारोन्मुखी योजनाएँ चलाई गईं। इससे सामाजिक असमानताओं को कम करने में मदद मिली।

अल्पसंख्यक और वंचित वर्ग

अल्पसंख्यक समुदायों के लिए शैक्षणिक और आर्थिक योजनाएँ लागू की गईं। मदरसा आधुनिकीकरण, छात्रवृत्ति और कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रमों से इन वर्गों को विकास की मुख्यधारा से जोड़ने का प्रयास हुआ। सामाजिक समावेशन की यह नीति बिहार के सामाजिक ताने-बाने को मजबूत करती है।

इस प्रकार 2005 से 2025 तक नीतीश कुमार की भूमिका बिहार के विकास में विशेष रूप से महिला सशक्तिकरण और सामाजिक न्याय के क्षेत्र में महत्वपूर्ण रही है। शिक्षा, स्वास्थ्य, राजनीतिक भागीदारी और आर्थिक आत्मनिर्भरता के माध्यम से महिलाओं को सशक्त किया

गया, वहीं सामाजिक न्याय की नीतियों ने वंचित वर्गों को अवसर प्रदान किए। यद्यपि चुनौतियाँ अभी भी मौजूद हैं, फिर भी यह कहना उचित होगा कि इस अवधि में बिहार ने सामाजिक परिवर्तन की दिशा में ठोस और प्रभावी कदम बढ़ाए हैं।

आर्थिक विकास और निवेश

2005 में नीतीश कुमार के नेतृत्व में बिहार में सत्ता परिवर्तन हुआ, जिसने राज्य की आर्थिक दिशा और विकास रणनीति को नई गति दी। इससे पहले बिहार की अर्थव्यवस्था धीमी विकास दर, कमजोर बुनियादी ढाँचे और सीमित निवेश के कारण पिछड़ रही थी। 2005-2025 के दो दशकों में सरकार का मुख्य फोकस सुशासन, आधारभूत संरचना के विस्तार, कृषि-सुधार, औद्योगिक प्रोत्साहन और निवेश के अनुकूल माहौल के निर्माण पर रहा, जिसका राज्य की अर्थव्यवस्था पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा।13

सबसे पहले आर्थिक वृद्धि दर की बात करें तो 2005 के बाद बिहार ने लगातार ऊँची विकास दर दर्ज की। सड़क, पुल, बिजली और सिंचाई जैसी आधारभूत सुविधाओं में निवेश से उत्पादक गतिविधियों को गति मिली। ग्रामीण सड़कों (मुख्यमंत्री ग्राम संपर्क योजना) और राष्ट्रीय राजमार्गों के विस्तार ने बाजारों तक पहुँच आसान की, जिससे कृषि और गैर-कृषि दोनों क्षेत्रों में आय बढ़ी। बिजली उत्पादन व वितरण में सुधार के कारण औद्योगिक इकाइयों और सेवाक्षेत्र को स्थिर ऊर्जा उपलब्ध हुई, जो निवेश के लिए आवश्यक शर्त है।14

कृषि क्षेत्र बिहार की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। नीतीश कुमार सरकार ने कृषि रोडमैप, बीज-उर्वरक उपलब्धता, सिंचाई परियोजनाओं और कृषि यंत्रीकरण पर जोर दिया। इससे कृषि उत्पादकता में वृद्धि हुई और किसानों की आय में सुधार आया। फसल विविधीकरण, बागवानी, डेयरी और मत्स्य पालन को प्रोत्साहन मिलने से ग्रामीण अर्थव्यवस्था मजबूत हुई। कृषि-आधारित उद्योगों (फूड प्रोसेसिंग) की संभावनाएँ भी बढ़ीं, जिसने निवेश आकर्षित किया।

औद्योगिक विकास और निवेश नीति के स्तर पर 2006 के बाद राज्य ने निवेश प्रोत्साहन नीतियाँ लागू कीं। औद्योगिक क्षेत्रों और आईटी पार्कों के विकास, सिंगल-विंडो क्लीयरेंस, कर-छूट और सब्सिडी जैसी व्यवस्थाओं ने निजी निवेशकों का भरोसा बढ़ाया। यद्यपि बिहार बड़े पैमाने के भारी उद्योगों में अपेक्षित छलांग नहीं लगा सका, फिर भी लघु एवं मध्यम उद्योगों (MSME), ईंट-भट्ठा, हैंडलूम, हथकरघा, डेयरी, खाद्य प्रसंस्करण और सेवा क्षेत्र में निवेश बढ़ा। स्टार्टअप नीति और कौशल विकास कार्यक्रमों से युवा उद्यमिता को भी समर्थन मिला।15

मानव पूंजी और सामाजिक निवेश ने आर्थिक विकास को दीर्घकालिक आधार दिया। शिक्षा, स्वास्थ्य, महिला सशक्तिकरण और कानून-व्यवस्था में सुधार से कार्यबल की गुणवत्ता में वृद्धि हुई। बालिका शिक्षा, साइकिल व पोशाक योजनाएँ, और स्वास्थ्य अवसंरचना पर खर्च ने सामाजिक संकेतकों को बेहतर बनाया, जिसका सकारात्मक असर उत्पादकता और निवेश वातावरण पर पड़ा।

राजकोषीय प्रबंधन और सुशासन भी निवेश आकर्षण के महत्वपूर्ण कारक रहे। वित्तीय अनुशासन, पारदर्शिता, ई-गवर्नेंस और प्रशासनिक सुधारों ने राज्य की साख में सुधार किया। अपराध नियंत्रण और कानून-व्यवस्था में सुधार से निवेशकों का जोखिम घटा। केंद्र सरकार की योजनाओं और अनुदानों का प्रभावी उपयोग कर राज्य ने पूंजीगत व्यय बढ़ाया।16

2020 के बाद चुनौतियाँ भी रहीं कोविड-19 का प्रभाव, श्रमिकों का पलायन और औद्योगिक विविधीकरण की सीमाएँ। इसके बावजूद बुनियादी ढाँचे, शहरी विकास, स्टार्टअप्स और सेवा क्षेत्र में निवेश जारी रहा। 2025 तक बिहार की अर्थव्यवस्था में स्थिरता, बेहतर कनेक्टिविटी और निवेश के लिए अपेक्षाकृत अनुकूल वातावरण विकसित हुआ।

तालिका 6: राज्य जीएसडीपी वृद्धि दर

अवधि	औसत वृद्धि
2005-10	मध्यम
2010-20	उच्च
2020-25	स्थिर

स्रोत: Government of Bihar. (2025). Bihar Economic Survey 2024 25. Presented in Bihar Legislative Assembly on 28 Feb 2025.

समग्रतः, 2005–2025 के दौरान नीतीश कुमार की भूमिका आर्थिक विकास और निवेश के लिए आधार निर्माण, सुशासन, कृषि-सुधार और बुनियादी ढाँचे के विस्तार में निर्णायक रही। यद्यपि औद्योगिक क्रांति जैसी तेज़ छलांग अभी शेष है, फिर भी निवेश-अनुकूल माहौल, मानव पूंजी में सुधार और निरंतर विकास दर ने बिहार को प्रगति के पथ पर अग्रसर किया।

सामाजिक परिवर्तन और मानव विकास

2005 के बाद बिहार के सामाजिक-आर्थिक परिदृश्य में जो परिवर्तन दिखाई देता है, उसमें मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। लंबे समय तक पिछड़ेपन, कमजोर प्रशासन और सामाजिक अव्यवस्था से जूझ रहे बिहार में शासन-प्रशासन की प्राथमिकताओं को पुनर्स्थापित करने का प्रयास इस दौर की प्रमुख विशेषता रहा।17

सामाजिक परिवर्तन के क्षेत्र में कानून-व्यवस्था में सुधार, पंचायती राज संस्थाओं को सशक्त बनाना और महिलाओं की भागीदारी बढ़ाना उल्लेखनीय कदम रहे। पंचायतों में महिलाओं को 50 प्रतिशत आरक्षण देकर सामाजिक समावेशन को नई दिशा मिली। बालिका शिक्षा को प्रोत्साहन देने हेतु साइकिल योजना, पोशाक योजना और छात्रवृत्ति कार्यक्रमों ने विद्यालयों में नामांकन और उपस्थिति बढ़ाई, जिससे लैंगिक असमानता में कमी आई।18

मानव विकास के संदर्भ में शिक्षा और स्वास्थ्य को केंद्र में रखा गया। प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालयों के विस्तार, शिक्षकों की नियुक्ति तथा मध्याह्न भोजन योजना के सुदृढ़ीकरण से साक्षरता दर में सुधार हुआ। स्वास्थ्य क्षेत्र में प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों का विस्तार, आशा कार्यकर्ताओं की भूमिका और संस्थागत प्रसव को बढ़ावा देने से मातृ एवं शिशु मृत्यु दर में गिरावट देखी गई। पेयजल, स्वच्छता और शौचालय निर्माण (लोहिया स्वच्छ बिहार अभियान) ने ग्रामीण स्वास्थ्य और जीवन-स्तर को बेहतर किया।

सामाजिक न्याय और मानव विकास के बीच संतुलन बनाने का प्रयास नीतीश कुमार के शासन की विशेष पहचान रही। हालांकि बेरोज़गारी, औद्योगिक विकास और प्रवासन जैसी चुनौतियाँ बनी रहीं, फिर भी 2005 से 2025 के बीच बिहार में सामाजिक संरचना, मानव विकास सूचकांकों और शासन की गुणवत्ता में जो सुधार हुआ, उसमें नीतीश कुमार की नीतियों और कार्यक्रमों की निर्णायक भूमिका मानी जाती है।19

आलोचनाएँ और चुनौतियाँ

बिहार के विकास में नीतीश कुमार की भूमिका (2005-2025) उल्लेखनीय रही है, लेकिन उनके शासनकाल में आलोचनाएँ और चुनौतियाँ भी रही हैं। 2005 में सत्ता में आने के बाद, उन्होंने कानून-व्यवस्था, शिक्षा और अवसंरचना में सुधार के लिए कई कदम उठाए। सड़क निर्माण, बिजली आपूर्ति और सरकारी सेवाओं की पहुँच बढ़ाने जैसी योजनाएँ आम जनता के लिए राहत लेकर आईं। महिलाओं और कमजोर वर्गों के सशक्तिकरण पर भी ध्यान दिया गया, जैसे कि मुफ्त साइकिल योजना और बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ अभियान।

हालांकि, आलोचना भी काफी रही। भ्रष्टाचार और nepotism के मामलों ने उनके शासन पर सवाल उठाए। कई विकास परियोजनाएँ धीमी गति से पूरी हुईं, और कुछ मामलों में राजनीतिक लाभ के लिए योजनाओं का उपयोग किया गया। राजनैतिक गठबंधनों में बदलाव और सत्ता स्थिरता के लिए की गई समझौते भी उनकी नीतियों की विश्वसनीयता को प्रभावित करते रहे।19

चुनौतियों की बात करें तो, बिहार में अभी भी बेरोजगारी, कृषि संकट और सामाजिक असमानताएँ बड़ी चुनौती बनी हुई हैं। स्वास्थ्य सेवाओं और उच्च शिक्षा के क्षेत्र में पर्याप्त सुधार नहीं हो सका। प्राकृतिक आपदाओं और बाढ़ जैसी समस्याओं ने विकास योजनाओं को बार-बार प्रभावित किया।20

संक्षेप में, नीतीश कुमार का शासन बिहार के विकास में कई सकारात्मक पहलुओं के लिए जाना जाता है, लेकिन भ्रष्टाचार, धीमी परियोजना कार्यान्वयन और सामाजिक असमानताओं जैसी चुनौतियाँ उन्हें पूरी तरह सफल शासनकर्ता नहीं बनने देतीं। उनकी भूमिका मिश्रित परिणाम वाली रही है जहाँ विकास के कई संकेत दिखे, वहीं आलोचनाएँ और अर्धसफलताएँ भी स्पष्ट हैं।

2005–2025 का समग्र मूल्यांकन

2005 में नीतीश कुमार के मुख्यमंत्री बनने के बाद बिहार ने सामाजिक, आर्थिक और प्रशासनिक सुधारों की दिशा में महत्वपूर्ण प्रगति की। उनके नेतृत्व में भ्रष्टाचार के खिलाफ कठोर कदम, कानून-व्यवस्था में सुधार और सरकारी तंत्र की कार्यक्षमता बढ़ाने पर विशेष जोर दिया गया। उन्होंने "सड़कों और बिजली" जैसी आधारभूत संरचना परियोजनाओं को प्राथमिकता दी, जिससे राज्य में उद्योगों और व्यापार के लिए अनुकूल वातावरण तैयार हुआ।21

शिक्षा क्षेत्र में उनका योगदान उल्लेखनीय रहा। सरकारी स्कूलों की स्थिति सुधारने, छात्रावासों और छात्रवृत्तियों का विस्तार करने के साथ-साथ बालिका शिक्षा को प्रोत्साहन देने से बिहार की साक्षरता दर में सुधार हुआ। स्वास्थ्य क्षेत्र में भी कई योजनाएं लागू की गईं, जैसे मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य सेवाओं को सुदृढ़ करना और प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों की पहुँच बढ़ाना।22

नीतीश कुमार ने महिलाओं और पिछड़े वर्गों के सशक्तिकरण को भी प्राथमिकता दी। महिला सशक्तिकरण योजनाओं और सामाजिक सुरक्षा योजनाओं के माध्यम से समाज के कमजोर वर्गों को मुख्यधारा में लाने का प्रयास किया गया।

आर्थिक दृष्टि से, बिहार में निवेश आकर्षित करने और रोजगार सृजन के लिए औद्योगिक नीति को बेहतर बनाया गया। सूखा-प्रभावित क्षेत्रों में कृषि सुधार, सिंचाई परियोजनाओं और ग्रामीण विकास कार्यक्रमों ने किसानों की स्थिति में सुधार किया।23

हालांकि, कुछ आलोचक अभी भी यह मानते हैं कि बिहार में रोजगार और औद्योगिक विकास अपेक्षित गति से नहीं हुआ। इसके बावजूद, 2005–2025 की अवधि में नीतीश कुमार का नेतृत्व राज्य के विकास में निर्णायक और स्थायी रहा। उनकी नीतियों ने बिहार को पिछले दशकों की तुलना में अधिक सुरक्षित, शिक्षित और सशक्त बनाने में मदद की, और राज्य को राष्ट्रीय स्तर पर विकास की दिशा में पहचान दिलाई।

निष्कर्ष

नीतीश कुमार के नेतृत्व में 2005 से 2025 तक बिहार ने आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रगति की। उनकी सरकार ने राज्य में भ्रष्टाचार और अपराध पर नियंत्रण, सड़कों व आधारभूत ढांचे के सुधार, और शिक्षा व स्वास्थ्य सेवाओं के विस्तार पर विशेष ध्यान दिया। भ्रष्टाचार मुक्त प्रशासन और सुशासन के उनके प्रयासों ने निवेश आकर्षित किया और उद्योगों के विकास को बढ़ावा दिया।

शिक्षा क्षेत्र में उनकी पहल जैसे कि लड़कियों की मुफ्त शिक्षा, स्कूली इन्फ्रास्ट्रक्चर में सुधार और शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम ने राज्य की साक्षरता दर में महत्वपूर्ण वृद्धि की। स्वास्थ्य क्षेत्र में मातृ व शिशु मृत्यु दर को कम करने के लिए जनकल्याणकारी योजनाओं का

विस्तार हुआ, और प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों की संख्या व गुणवत्ता में सुधार देखा गया।

इन्फ्रास्ट्रक्चर के क्षेत्र में सड़क, पुल, रेल और ऊर्जा परियोजनाओं पर जोर देने से राज्य की आर्थिक गतिशीलता बढ़ी। कृषि विकास योजनाओं और किसान कल्याण कार्यक्रमों ने ग्रामीण क्षेत्रों की अर्थव्यवस्था में स्थिरता लाई। इसके अलावा, महिलाओं और कमजोर वर्गों के सशक्तिकरण के लिए सामाजिक सुरक्षा योजनाओं और वित्तीय समावेशन कार्यक्रमों की शुरुआत हुई।

हालांकि, बिहार में विकास की राह में चुनौतियाँ भी रही, जैसे कि बेरोजगारी, ग्रामीण-शहरी असमानता और जलवायु से जुड़ी समस्याएँ। बावजूद इसके, नीतीश कुमार की नीतियाँ और प्रशासनिक दृष्टिकोण राज्य के समग्र विकास में निर्णायक रहे। उनका शासन मॉडल विशेष रूप से सुशासन, लोक कल्याण और निवेश अनुकूल माहौल बनाने के लिए जाना जाता है।

संक्षेप में, 2005 से 2025 तक नीतीश कुमार का योगदान बिहार के आधुनिक विकास में मील का पत्थर साबित हुआ। उनके प्रयासों ने राज्य को एक स्थिर, सुरक्षित और विकासोन्मुख प्रदेश के रूप में स्थापित किया, जिससे आर्थिक वृद्धि के साथ-साथ सामाजिक सुधार भी संभव हुआ।

सन्दर्भ-सूची

1. Asianet News Hindi. नीतीश कुमार ने जारी की 20 साल की 'विकास रिपोर्ट', बिहार का बजट 24 हजार cr. से 3 लाख cr. पार; c2025. Retrieved from https://hindi.asianetnews.com/state/bihar/nitish-kumar-released-development-report-of-20-years-on-x-bihar-chunav-2025
2. Business Standard. Two decades of Nitish Kumar: How 'Sushasan babu' reshaped Bihar's story; c2025. Retrieved from https://www.business-standard.com/elections/bihar-elections/nitish-kumar-governance-liquor-ban-development-education-infra-bihar-12102700059
3. International Journal of Social Science and Economic Research. Bihar's Development and Economic Growth: Role of Government & Challenges and Opportunities; c2025; 10(02).
4. Punjab Kesari Bihar. 2005 के बाद बिहार ने बदली अपनी पहचान: नीतीश कुमार बोले; c2025. Retrieved from https://bihar.punjabkesari.in/bihar/news/nitish-kumar-highlights-bihar-s-20-year-transformation-236735
5. The Times of India. NDA govt in Bihar is working for the welfare of youth ever since 2005: Nitish to PM Modi; c2025. Retrieved from https://timesofindia.indiatimes.com/city/patna/nda-govt-in-bihar-is-working-for-the-welfare-of-youth-ever-since-it-came-into-power-in-nov-2005-nitish-to-pm-modi/articleshow/14309698.cms
6. AajTak. शिक्षा स्वास्थ्य से लेकर रोजगार तक… विधानसभा में CM नीतीश बोले 2005 से बिहार में कानून का राज; c2025.
7. https://www.aajtak.in/bihar/story/bihar-assembly-cm-nitish-speech-nda-government-targets-development-roadmap-ntc-2403416-2025-12-04 (News Source). नीतीश कुमार, चुनाव से पहले नीतीश का 'विकास का तिलिस्म' (Navbharat Times report on Pragati Yatra and schemes). Retrieved from https://navbharattimes.indiatimes.com/state/bihar/patna/nitish-kumar-pragati-yatra-2500-crore-development-bonanza-in-magadh-3-crore-people-to-benefit/articleshow/18495941.cms
8. Navbharat Times. मर्डर केस में 7.72% की कमी, तेजस्वी के क्राइम बुलेटिन पर नीतीश सरकार का जवाब; c2025.
9. Navbharat Times. बिहार में स्वास्थ्य प्रणाली में सुधार: 2005 के बाद से मरीजों की संख्या में जबरदस्त वृद्धि; c2025.
10. (Hindi News Report). जब लालू यादव तैयार तो नीतीश कुमार क्यों नहीं चाहते बख्तियारपुर स्टेशन का नाम बदलना?
11. Youth Ki Awaaz. Bihar's Dynastic Market: RJD's Schemes Vs. Nitish's Achievements; c2025. Retrieved fromhttps://www.youthkiawaaz.com/2025/09/biharsdynastic-market-rjds-schemes-vs-nitishs-achievements/amp/
12. Times of India (Online). (n.d.). Nitish Kumar hikes stipend for anganwadi workers (Referenced within analysis).
13. KKN Live. Bihar Rural Development Soars Under Nitish Kumar; c2025. Retrieved from https://kknlive.com/en/bihar-news/bihar-rural-development-soars-under-nitish-kumar/ KKN Live
14. India Today. 10 major Bihar education reforms under Nitish Kumar; c2025. Retrieved from https://www.indiatoday.in/education-today/gk-current-affairs/story/nitish-kumar-education-reforms-bihar-elections-2819672-2025-11-14/amp
15. Indian Express / Hindusthan Samachar. बिहार के विकास में वर्ष 2005 से लगातार लगा हुआ हूं: नीतीश कुमार; c2025.
16. (Wikipedia). Software Technology Park of India, Darbhanga (for context of IT development in Bihar).https://enwikipedia.org/wiki/Software_Technology_Park_of_India%2C_Darbhanga
17. (General Election Data). 2024 Indian general election in Bihar (for political context of Nitish Kumar's tenure).https://enwikipedia.org/wiki/2024
18. Navbharat Times. नीतीश कुमार प्रगति यात्रा के तहत बड़े विकास योजनाओं की घोषणा; c2025.
19. Hindusthan Samachar. नीतीश कुमार के संवाद कार्यक्रम में विकास पर चर्चा; c2025.
20. Navbharat Times. नीतीश कुमार के 20 साल के विकास कार्यों का विश्लेषण; c2025.
21. Navbharat Times. शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार पर मुख्यमंत्री के बयान; c2025.
22. The Week. (2025). CM Nitish Kumar, a relentless development "Yatri". Retrieved from https://www.theweek.in/konnect/economy/2025/07/09/cm-nitish-kumar-a-relentles-development-yatri-committed-to-bihars-development.html
23. Hindusthan Samachar. बुनियादी ढांचा और कानून व्यवस्था पर CM का भाषण; c2025.